डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

1 मई 2021

प्रेस विज्ञप्ति

गुरु तेगबहादुर के 400वें प्रकाशोत्सव के अवसर पर "राष्ट्रीय भावात्मक एकता और गुरु तेगबहादुर' विषयक दो–दिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन

साहित्य अकादेमी द्वारा सिख संत गुरु तेगबहादुर के 400वें प्रकाशोत्सव के अवसर पर "राष्ट्रीय भावात्मक एकता और गुरु तेगबहादुर' विषयक दो–दिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन 1–2 मई 2021 को किया गया है। 1 मई 2021 को इस संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। वेबिनार का आरंभ श्रीमती निवेदिता सिंह और उनके साथियों द्वारा गुरुवाणी के गायन से हुआ। फिर अपने स्वागत भाषण में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गुरु तेगबहादुर के मुख्य संदेश प्रेम, त्याग, एकता और शांति को रेखांकित किया। अपने आरंभिक वक्तव्य में अकादेमी के पंजाबी भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वनीता ने कहा कि आज से 400 साल पहले हिंद की चादर बनकर गुरु तेगबहादुर प्रकट हुए थे। उन्होंने उनकी रचनाओं में सन्निहित मूल्यों को संदर्भित करते हुए नवम ग्रंथ के कुछ अंशों का पाठ भी किया। प्रख्यात लेखक, विद्वान एवं इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला के अध्यक्ष तथा महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलाधिपति प्रो. कपिल कपूर ने संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्राचीन भारत की ज्ञान परंपरा की विकास यात्रा को रेखांकित करते हुए कहा कि गुरु ज्ञान को लोकभाषा के माध्यम से लोकमानस में स्थापित करने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि गुरु तेगबहादुर कवि, संत, सिपाही और दार्शनिक इन चार गुणों से संपन्न एक अद्वितीय गुरु थे। उन्होंने बताया कि किस प्रकार हजारों साल से संतों का ज्ञान और वाणियाँ भारतीय संस्कृति के दैनंदिन जीवन का अंग बनी हुई हैं। उन्होंने भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की इस बात के लिए सराहना की कि उन्होंने गुरु तेगबहादुर की 400वीं जयंती समारोहपूर्वक मनाने के लिए नेतृत्व किया। पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. जगबीर सिंह ने अपने बीज वक्तव्य में इस बात को व्याख्यायित किया कि गुरु तेगबहादुर ने किस प्रकार राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रचार–प्रसार अपने कार्यों द्वारा किया। उन्होंने कहा कि ऋग्वेद से चली आ रही दार्शनिक परंपरा को गुरु नानक देव ने सामान्य जन के लिए उपलब्ध कराया और गुरु तेगबहादुर की वाणी भी उसी परंपरा को आगे बढ़ाती है। उन्होंने कहा कि हमारी सभ्यता ज्ञान की सभ्यता है और ज्ञान ही हमें मुक्ति देता है। गुरु तेगबहादुर ने वैयक्तिक मुक्ति की राह दिखाई और समाज को बदल दिया। पंजाबी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जसपाल सिंह ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए गुरु तेगबहादुर के संपूर्ण दर्शन को व्याख्यायित किया। उन्होंने कहा कि उनके वैराग्य का अर्थ जिम्मेदारियों से भागना नहीं है, बल्कि उनको निभाना है, उसमें संघर्ष शामिल है। उन्होंने कहा कि भारत के विभिन्न भागों की अपनी यात्राओं के माध्यम से गुरु तेगबहादुर ने सिख समाज के बीच संपर्क और एकता बनाने का काम किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उनका संपूर्ण कृतित्व धर्म, प्यार, शांति, एकता, साहस और त्याग के लिए समर्पित है। उनका संदेश और समर्पण संपूर्ण मानवता के लिए उपयोगी और अनिवार्य है। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी में पंजाबी भाषा परामर्श मंडल के सदस्य श्री हरविंदर सिंह के द्वारा किया गया, जबकि सत्रांत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सूचित किया कि संगोष्ठी के विचार सत्रों का आयोजन कल दिनांक 2 मई 2021 को किए जाएँगे।

(के. श्रीनिवासराव)